Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

विश्व इतिहास

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: RJPM20

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

विश्व इतिहास

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

RAS DLP विषय सूची (Contents)

1.	**पुनर्जागरण**	**5–22**
	1.1 पुनर्जागरण	5
	1.2 पुनर्जागरण की विभिन्न क्षेत्रों में अभिव्यक्ति/प्रभाव	10
	1.3 पुनर्जागरण : एक मनोदशा	13
	1.4 धर्म सुधार आंदोलन	14
	1.5 प्रतिवादी धर्म सुधार आंदोलन	18
	1.6 वाणिज्यवाद	19
2.	**प्रबोधन का युग**	**23–30**
	2.1 प्रबोधन से जुड़ी विशेषताएँ	23
	2.2 प्रबोधन युग के प्रमुख विचारक	24
	2.3 रूसो: 1712–1778 ई.	26
	2.4 प्रबोधन का प्रभाव	28
	2.5 यूरोप के बाहर प्रबोधन का विस्तार	29
3.	**औद्योगिक क्रांति**	**31–55**
	3.1 औद्योगिक क्रांति के कारण	31
	3.2 इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति का आरंभ	32
	3.3 औद्योगिक क्रांति का प्रभाव	36
	3.4 यूरोपीय देशों में औद्योगीकरण का प्रसार	41
	3.5 अन्य देशों में औद्योगिक क्रांति का प्रसार	42
	3.6 समाजवादी औद्योगीकरण	45
	3.7 आधुनिक औद्योगिक क्रांति (चतुर्थ औद्योगिक क्रांति)	48
	3.8 वैश्वीकरण	50

4. प्रथम विश्वयुद्ध **56–75**

4.1 संपूर्ण युद्ध के रूप में प्रथम विश्वयुद्ध 56

4.2 प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व की राजनीतिक पृष्ठभूमि 59

4.3 प्रथम विश्वयुद्ध के कारण 61

4.4 प्रथम विश्वयुद्ध का परिणाम 64

4.5 पेरिस शांति सम्मेलन 65

4.6 वर्साय की संधि: एक विहंगावलोकन 69

5. द्वितीय विश्वयुद्ध **76–92**

5.1 द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व की पृष्ठभूमि एवं घटनाक्रम 76

5.2 द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण 77

5.3 द्वितीय विश्वयुद्ध के चरण 84

5.4 द्वितीय विश्वयुद्ध का परिणाम 87

6. यूरोपीय साम्राज्यवाद : अफ्रीका व एशिया **93–111**

6.1 साम्राज्यवाद 93

6.2 अटलांटिक पार दास व्यापार 94

6.3 साम्राज्यवाद तथा मुक्त व्यापार 96

6.4 यूरोपीय साम्राज्यवाद व अफ्रीका 98

6.5 यूरोपीय साम्राज्यवाद व एशिया 104

6.6 नवसाम्राज्यवाद 109

7. औपनिवेशिक शासन से मुक्ति **112–132**

7.1 लैटिन अमेरिका : औपनिवेशिक शासन से मुक्ति 113

7.2 मिस्र का स्वाधीनता आंदोलन 116

7.3 अरब राष्ट्रवाद का उदय 121

7.4 अफ्रीका : रंग-भेद नीति से लोकतंत्र की ओर 123

7.5 दक्षिण-पूर्व एशिया : वियतनाम की स्वतंत्रता 125

7.6 विऔपनिवेशीकरण तथा अल्प विकास 128

अध्याय
1

पुनर्जागरण (Renaissance)

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ है – **"फिर से जागना"** किंतु यह किसी सोए हुए व्यक्ति को निद्रा से जागना नहीं बल्कि समस्त मानव का जागृत होना है। वस्तुत: यूरोप में पाँचवीं-छठी शताब्दी ईसा पूर्व के यूनानी रोमन साम्राज्य में सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, पाइथागोरस जैसे अनेक विचारकों ने मानव विकास के अनेक आयामों को प्रस्तुत किया था जिनका मध्य युग में पतन हो गया था। वे पुन: तेरहवीं सदी के बाद सुषुप्तावस्था से जागृत अवस्था में लौट आए। प्राचीन यूरोप की प्रेरणा के आधार पर आधुनिक यूरोप के निर्माण को प्रारंभ में पुनर्जागरण के नाम से विहित किया जाता है।

1.1 पुनर्जागरण *(Renaissance)*

यूरोपीय इतिहास की विवेचना के संदर्भ में पुनर्जागरण काल सामान्यत: लगभग 1350 से 1550 ई. के बीच माना जाता है, परंतु कुछ इतिहासकार इसे 14वीं से लेकर 17वीं शताब्दी तक मानते हैं। पुनर्जागरण फ्रेंच शब्द 'रिनेसा' (Renaissance) से बना है, जिसका अर्थ होता है–पुनर्जन्म। पुनर्जन्म या पुनर्जागरण से तात्पर्य प्राचीन यूरोपीय संस्कृति के पुन: उत्थान से है। प्राचीन यूरोप में यूनानी एवं रोमन सभ्यता उन्नत अवस्था में थी जो मध्यकाल में लुप्तप्राय हो गई थी। अत: पुनर्जागरण एक उदार बौद्धिक एवं सांस्कृतिक आंदोलन था जिसमें प्राचीन यूरोप की प्रेरणा के आधार पर नए यूरोप का निर्माण हो रहा था। इसे आधुनिक विचारों, तर्क और विज्ञान के धरातल पर जाँचा और परखा गया था।

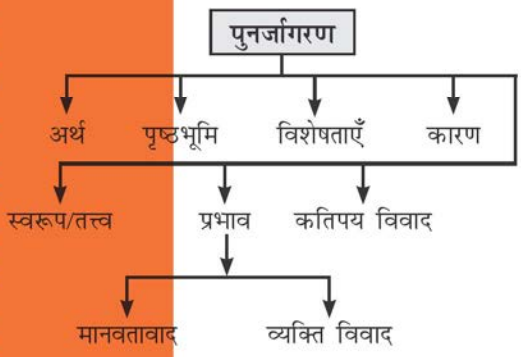

पृष्ठभूमि *(Background)*

- विद्वानों ने विश्व के इतिहास को तीन भागों में बाँटा है। प्रारंभ से पाँचवीं शताब्दी तक प्राचीन काल माना जाता है। यह युग रोम तथा यूनान की उन्नति का युग था। इस युग में मनुष्य सुखी था। धर्म का प्रभाव अभी तक मनुष्य जीवन पर स्थापित नहीं हुआ था तथा सामंती दुर्गुणों से भी यह काल मुक्त था। अत: प्राचीन काल को मनुष्य की खुशहाली तथा गौरव का युग माना जाता है।
- वस्तुत: तीसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य दो भागों- पूर्वी एवं पश्चिमी में विभाजित हो गया। पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया एवं पश्चिमी रोमन साम्राज्य की राजधानी रोम थी। जर्मन आक्रमणकारियों द्वारा पश्चिमी रोमन साम्राज्य पर निरंतर आक्रमण के फलस्वरूप पाँचवीं सदी (477 ई.) में इस साम्राज्य का विघटन हो गया। यहीं से यूरोप में सामंतवाद की शुरुआत मानी जाती है। पूर्वी रोमन साम्राज्य ने 1453 ई. तक अपना अस्तित्व बचाए रखा।
- रोम और यूनान की संस्कृतियों के पतन के साथ ही मध्ययुग का आरंभ होता है। यह युग लगभग 14वीं सदी तक माना जाता है। मध्ययुग को 'अंधकार युग' कहा जाता है, क्योंकि इस काल के यूरोपीय राज्यों में सामंती प्रथा का दबदबा कायम हो गया, बौद्धिक प्रगति एवं वैचारिक स्वतंत्रता का मार्ग अवरुद्ध हो गया, मनुष्य जीवन पर धर्म का अत्यधिक प्रभाव स्थापित हो गया तथा जन्म से मृत्यु तक मनुष्य जीवन धर्म के गतिहीन चक्र से जुड़ गया और परलोक को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा। कुल मिलाकर मनुष्य जीवन पर चर्च का नियंत्रण स्थापित हो गया और अब सत्य वही था जो चर्च कहता था।
- 14वीं से 16वीं सदी के यूरोप में एक नई चेतना दृष्टिगत होती है। इस नवीन चेतना ने मनुष्य को मध्यकालीन अंधकार को समाप्त कर प्राचीन गौरव को पुन:स्थापित करने के लिये प्रेरित किया। इस प्रकार उदित हुई इस नई चेतना को पुनर्जागरण कहा गया।

पद्धतियों के बजाय तर्क, ज्ञान, निरीक्षण, प्रयोग और परीक्षण पर बल दिया गया, जिससे प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को वैज्ञानिक आधार पर खोजा जा सके। यह युग वैचारिक क्रांति के दौर से गुजर रहा था जिसको पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन, प्रतिवादी धर्म सुधार आंदोलन, वाणिज्यवाद, व्यापारिक-क्रांति और भौगोलिक खोजों द्वारा जन्मी नई प्रवृत्तियों से बल मिला। फलत: विश्व संबंधी आधुनिक दृष्टिकोण की नींव पड़ी। सत्रहवीं सदी तक ब्रह्मांड की जो व्याख्या चर्च और धार्मिक व्यक्तियों द्वारा की गई थी अब उसे वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा गलत सिद्ध कर दिया गया और प्रयोगों द्वारा सत्यापित होकर वास्तविकता संसार के समक्ष प्रस्तुत हुई।

मनुष्य जिस संसार में रह रहा था, उसके बारे में तथा विभिन्न घटनाओं तथा उनके विविध रूपों और प्रकृति के नियमों को समझने की कोशिश की। इस युग की वैज्ञानिक क्रांति ने धर्म, ईश्वर और मनुष्य से संबंधित विचारधारा को ही बदल दिया। धीरे-धीरे यूरोप की मनोदशा में परिवर्तन होना प्रारंभ हुआ, लोग अलौकिकता से धर्म निरपेक्ष, धर्म विज्ञान से विज्ञान की ओर उन्मुख हुए एवं स्वर्ग और नर्क की सुखद और दु:खद संकल्पनाओं की वास्तविकता समझने लगे।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- यूरोपीय इतिहास के संदर्भ में मोटे तौर पर 14वीं से 16वीं शताब्दी के 1350 ई. से 1550 ई. के बीच के काल को पुनर्जागरण काल का मान दिया जाता है।
- पुनर्जागरण काल में वेनिस, मिलान तथा फ्लोरेंस आदि अंतर्राष्ट्रीय शहरों का जन्म हुआ।
- यूरोप के पुनर्जागरण काल के प्रमुख चित्रकार फ्लोरेंस निवासी जिपोटो, लियोनार्दो-द-विंची व माइकल एंजेलो थे।
- मूर्तिकला के क्षेत्र में जियोवर्टी, माइकल एंजेलो, सेलिनी तथा डोनातेल्लों आदि ने इस काल में ख्याति प्राप्त की।
- वाद्य संगीत पुनर्जागरण में लोकप्रिय हुआ था नए वाद्य-यंत्रों का आविष्कार हुआ। आधुनिक 'ओपेरा' का जन्म इस काल का माना जाता है।
- पुनर्जागरण काल में सर्वप्रथम ऑयल पेंटिग का निर्माण हुआ जो काफी समय तक स्थायी रह सकती थी। इसके विपरीत मध्यकाल में केवल पानी में रंगों को घोलकर ही चित्र बनाया जाता था। ये चित्र थोड़ी नमी से नष्ट हो जाते थे।
- रेनेसा मैन- ऐसा व्यक्ति जिसकी विशेषज्ञता विभिन्न विषय क्षेत्रों में होती है। लियोनार्दो-द-विंची बहुमुखी प्रतिभा से युक्त था। वह महान चित्रकार, मूर्तिकार, स्थापत्यकार, गणितज्ञ तथा मानव शरीर का विशेषज्ञ था।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 15–20 शब्दो में दीजिये)

1. 'रेनेसा मैन' के आदर्श से आप क्या समझते हैं? **RAS (Mains) 2013**
2. पुनर्जागरण का अर्थ।
3. धर्मयुद्ध।
4. कुस्तुन्तुनिया।
5. इरैस्मस।

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 50–50 शब्दों में दीजिये)

1. पेट्रार्क।
2. चित्रकला में पुनर्जागरण का प्रभाव।
3. द लास्ट सपर।
4. संगीत के क्षेत्र में पुनर्जागरण का प्रभाव।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100 या 200 शब्दों में दीजिये)

1. इटली में पुनर्जागरण के उद्भव के कारण बताइये।
2. "मानवतावाद पुनर्जागरण का स्रोत और परिणाम दोनों था।" टिप्पणी कीजिये।
3. "पुनर्जागरण राजनीतिक अथवा धार्मिक आंदोलन नहीं था, वह एक मनोदशा थी।" टिप्पणी कीजिये।

अध्याय
2

प्रबोधन का युग
(The Age of Enlightenment)

यूरोप में 17वी-18वीं शताब्दी में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों के कारण इस काल को प्रबोधन, ज्ञानोदय अथवा विवेक का युग कहा गया और **इसका आधार पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन व वाणिज्यिक क्रांति ने तैयार कर दिया था।** पुनर्जागरण काल में विकसित हुई वैज्ञानिक चेतना तथा तर्क और अन्वेषण की प्रवृत्ति ने 18वीं शताब्दी में परिपक्वता प्राप्त कर ली। **वैज्ञानिक चिंतन की इस परिपक्व अवस्था को प्रबोधन के नाम से जाना जाता है।**

प्रबोधनकालीन चिंतकों ने इस बात पर बल दिया कि इस भौतिक दुनिया और प्रकृति में होने वाली घटनाओं के पीछे किसी न किसी व्यवस्थित, अपरिवर्तनशील और प्राकृतिक नियम का हाथ है। **फ्रांसिस बेकन** ने बताया कि विश्वास मज़बूत करने के तीन साधन हैं- **अनुभव**, **तर्क** व **प्रमाण** और इनमें सबसे अधिक शक्तिशाली **प्रमाण** है क्योंकि तर्क/अनुभव पर आधारित विश्वास स्थिर नहीं रहता।

2.1 प्रबोधन से जुड़ी विशेषताएँ *(Characteristics Related to Enlightenment)*

ज्ञान को विज्ञान के साथ जोड़ना *(Connecting Knowledge with science)*

प्रबोधन के चिंतकों ने ज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान के साथ जोड़ दिया। पर्यवेक्षण, प्रयोग और आलोचनात्मक छानबीन की व्यवस्थित पद्धति का प्रयोग ज्ञानोदय के चिंतकों की नज़र में सत्य तक पहुँचने का सक्षम आधार था। उनके मुताबिक ज्ञान को प्रयोग एवं परीक्षा योग्य होना चाहिये। इसके पास ऐसे प्रमाण होने चाहिये जो बोधगम्य हों और मानव मस्तिष्क की पहुँच में हों। ज्ञान की इसी धारणा के आधार पर प्रबोधन ने पराभौतिक अनुमान और ज्ञान में विरोध बताया।

प्रयोग एवं परीक्षण पर बल *(Focus on experiment and testing)*

मध्य युग में ईसाई मत का प्रभाव इसलिये माना जाता था क्योंकि ईश्वर द्वारा निर्मित इस दुनिया को मनुष्य नहीं जान सका। इस परिभाषा के मुताबिक यह दुनिया मानवीय बुद्धि के लिये अगम है। मनुष्य एवं ब्रह्मांड के बारे में सत्य का केवल **उद्घाटन** हो सकता है इसलिये उसे केवल पवित्र पुस्तकों के ज़रिये जाना जा सकता है। **"जहाँ ज्ञान का प्रकाश आलोकित नहीं होता, वहाँ विश्वास की ज्योति से रास्ता सूझता है।"** यही विश्वास मध्य युग की विशेषता थी।

ज्ञानोदय ने इस नज़रिये को खारिज कर दिया और दावा किया कि जिन चीज़ों को बुद्धि के प्रयोग व व्यवस्थित पर्यवेक्षण से नहीं जाना जा सकता, वे मायावी हैं। मनुष्य ब्रह्मांड के रहस्यों को पूरी तरह समझ सकता है। प्रकृति के बारे में हमें पवित्र पुस्तकों के माध्यम से नहीं बल्कि प्रयोगों एवं परीक्षाओं के माध्यम से बात करनी चाहिये।

कार्य-कारण संबंध का अध्ययन *(Study of cause effect relation)*

कार्य-कारण संबंध का अध्ययन विज्ञान संबंधी प्रबोधन चिंतन का केंद्रीय तत्त्व था। चिंतकों ने ऐसी पूर्ववर्ती घटना को चिह्नित करने की कोशिश की जिसका होना किसी परिघटना के पैदा होने के लिये अनिवार्य है और पूर्ववर्ती घटना के न होने से परवर्ती घटना पैदा नहीं होती। **वस्तुतः कारणों की खोज प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण पर मनुष्य का नियंत्रण बढ़ाने के साधन के रूप में की जाने लगी।**

मानवतावाद *(Humanitarianism)*

प्रबोधन युग के चिंतकों ने मानव की खुशी और भलाई पर बल दिया। उनके अनुसार मनुष्य स्वभाव से ही विवेकशील और अच्छा है किंतु स्वार्थी धर्माधिकारियों और उनके द्वारा बनाए गए नियमों ने मनुष्य को भ्रष्ट कर दिया। यदि मनुष्य अपने को इन स्वार्थी धर्माधिकारियों के चंगुल से मुक्त कर सके तो एक आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है। प्रबोधन

अध्याय
3

औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution)

'औद्योगिक क्रांति' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग इंग्लैंड के आर्थिक इतिहासकार **ऑर्नाल्ड टायनबी** ने किया। इनके अनुसार औद्योगिक क्रांति ने मानव जीवन को तीव्र गति से अत्यधिक गहरे रूप में प्रभावित किया। वस्तुत: औद्योगिक क्रांति उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन था, जिसके तहत शिल्प के स्थान पर शक्ति संचालित यंत्रों से काम लिया जाने लगा तथा औद्योगिक संगठन में भी परिवर्तन हुआ।

18वीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं 19वीं सदी में ब्रिटिश उद्योगों को अनेक महत्त्वपूर्ण एवं व्यापक परिवर्तनों से गुज़रना पड़ा, जिसके कारण इन परिवर्तनों को समवेत रूप में औद्योगिक क्रांति कहा जाने लगा। वस्तुत: यह कोई आकस्मिक घटना नहीं अपितु विकास की एक सतत् प्रक्रिया थी औद्योगिक क्रांति के अंतर्गत बहुत सारे परिवर्तन हुए। उत्पादन कार्य जो पहले हाथ से किये जाते थे अब मशीनों से होने लगे। नवीन आधारभूत धातुओं मुख्यत: लोहे के मिश्रण के साथ निर्मित धातु का प्रयोग होने लगा। नवीन ऊर्जा स्रोतों, जैसे – कोयला, पेट्रोलियम, विद्युत, वाष्प इंजन, ताप इंजन आदि का उपयोग होने लगा।

उत्पादन अब कारखानों में किया जाने लगा जिसमें श्रम विभाजन, कार्य कुशलता तथा विशेषज्ञ कार्यशीलता का समावेश था। कारखाना प्रणाली के उद्‌भव और विकास के फलस्वरूप पूंजीवाद का उदय हुआ और पूंजी संचय की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला। वाष्प चालित रेल इंजन और यंत्र चालित जहाज़ों के कारण यातायात में आमूलचूल परिवर्तन हो गया। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई, सामाजिक संरचना में परिवर्तन हुआ। सामंतों की जगह उद्योगपति एवं बुर्जुआ वर्ग अस्तित्व में आए। वस्तुत: यह परिवर्तन 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में अत्यंत तीव्र गति से हुए और इनके परिणाम भी क्रांतिकारी एवं युगांतकारी थे। अत: इन परिवर्तनों को औद्योगिक क्रांति के नाम से जाना गया।

3.1 औद्योगिक क्रांति के कारण *(Causes of Industrial Revolution)*

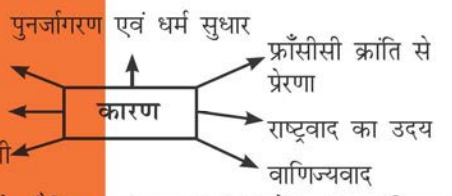

- **पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार :** पुनर्जागरण से यूरोप में आधुनिक युग की शुरुआत हुई। भौतिक एवं तार्किक विचारों की प्रगति ने विज्ञान के विकास में सहयोग प्रदान किया। विज्ञान के विकास ने तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी का विकास किया। पुनर्जागरण ने भौगोलिक खोजों को भी प्रोत्साहित किया, जिसके फलस्वरूप यूरोप के लोगों को भौतिक एवं मानव संसाधनों का एक विस्तृत खजाना प्राप्त हो गया।
- **कृषि क्रांति :** कृषिगत क्रांति के द्वारा मध्ययुगीन खुले व बिखरे खेतों को एकीकृत कर बड़े पैमाने पर कृषि आरंभ हुई। जिससे फसल उत्पादन में वृद्धि हुई। इससे उद्योगों हेतु कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल किये जाने वाले कृषोपज की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में हुई। साथ ही एकीकृत कृषि से बेरोज़गार हुए लोगों से कारखानों में मज़दूरों की पूर्ति हुई। अधिक उत्पादन से शहरों में नई बढ़ी जनसंख्या हेतु खाद्यान्न की आपूर्ति सुनिश्चित हुई। अधिक कृषि उत्पादन से भू-स्वामियों ने लाभ कमाया जिसे उन्होंने उद्योगों के विकास में लगाया जिससे वे और अधिक धन कमा सकें। कृषि से निकले मज़दूरों के कारखानों में काम करने से उनकी आमदनी बढ़ी, जिससे उनकी खर्च करने की क्षमता और मांग में वृद्धि हुई और अंतत: इससे उद्योगों को बढ़ावा मिला।
- **जनसंख्या में वृद्धि :** यूरोप में बढ़ती जनसंख्या वृद्धि के कारण रोज़गार और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की मांग में भारी वृद्धि हुई जिसकी आपूर्ति कृषि एवं कुटीर उद्योग से संभव नहीं थी। परिणामत: बड़े स्तर पर उत्पादन करने हेतु मशीन एवं कारखाना आधारित उद्योगों के अनुकूल वातावरण तैयार हुआ।
- **कारखाना पद्धति का विकास :** औद्योगिक क्रांति से पूर्व यूरोप में उत्पादन Putting Out पद्धति या घरेलू पद्धति पर आधारित था। इस व्यवस्था के अंतर्गत पूंजीपति, व्यापारी, कारीगरों को कच्चा माल देता था तथा कारीगर अपने निवास स्थान पर ही अपने औजारों से ही वस्तुओं का निर्माण करते थे। अब पूंजीपतियों ने अपनी सुविधा के लिये सारे कारीगरों

अध्याय
4

प्रथम विश्वयुद्ध
(First World War)

प्रथम विश्व युद्ध एक ऐसा युद्ध माना जाता है जिसमें शस्त्रास्त्रों, राष्ट्रों की सीमाओं और युद्ध के नियमों का पालन नहीं हुआ। इस युद्ध में राष्ट्र का प्रत्येक साधन-संसाधन प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से युद्ध में संलिप्त रहा। सैनिकों के अलावा आम नागरिक ने भी इस युद्ध में भाग लिया, जिससें अपार जन-धन की हानि हुई है।

4.1 संपूर्ण युद्ध के रूप में प्रथम विश्वयुद्ध
(First World War as a Total war)

प्रथम विश्वयुद्ध को सर्वांगिक युद्ध (Total War) के रूप में देखा जाता है। अपने विस्तार, स्वरूप और परिणामों की दृष्टि से प्रथम विश्वयुद्ध उसके पूर्व लड़े गए युद्धों से भिन्न था। बाल्कन क्षेत्र के मुद्दे से आरंभ हुए इस युद्ध ने शीघ्र ही विश्वव्यापी रूप धारण कर लिया। इस युद्ध में यूरोप, एशिया, अफ्रीका आदि के अधिकांश देश किसी-न-किसी रूप में शामिल रहे। यह युद्ध यूरोप, अफ्रीका, एशिया, अटलांटिक सागर, प्रशांत महासागर आदि क्षेत्रों में लड़ा गया। इतने बड़े पैमाने पर और इतने बड़े क्षेत्र पर पहली बार ऐसा युद्ध हुआ और इस युद्ध का प्रभाव भी इतना व्यापक रहा कि संपूर्ण मानवता को इसने प्रभावित किया। इस युद्ध में उपयोग में लाए गए अस्त्र, शस्त्रों ने युद्ध को पूर्णत: विनाशकारी बना दिया, फलस्वरूप भीषण नरसंहार हुआ। पूर्व के युद्धों में प्राय: युद्धरत देश के सैनिक मारे जाते थे परंतु प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान सैनिक से कहीं ज्यादा नागरिक मारे गए। वस्तुत: प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान नागरिक क्षेत्र पर की गई बमबारी से तथा युद्ध के कारण फैलने वाली महामारियों से मरने वाले लोगों की संख्या सैनिकों से कहीं ज्यादा थी। इस युद्ध ने राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव डाला, साथ ही आर्थिक क्षेत्र भी उसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे। युद्ध के पश्चात् फैली अव्यवस्था ने विश्व को आर्थिक मंदी की ओर धकेल दिया। इस दृष्टि से प्रथम विश्वयुद्ध को संपूर्ण युद्ध के रूप में देखा जा सकता है।

प्रभाव

सर्वांगिक युद्ध के रूप में प्रथम विश्वयुद्ध के सामाजिक निहितार्थ से आशय यह है कि इस युद्ध ने सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला। दूसरे शब्दों में युद्ध के फलस्वरूप समाज पर पड़ने वाले प्रभावों की विस्तारपूर्वक चर्चा करना है। निम्न बिंदुओं के तहत प्रथम विश्वयुद्ध के प्रभावों को देखा जा सकता है–

- **महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन:** प्रथम विश्वयुद्ध ने सामाजिक स्वतंत्रता को एक नई दिशा दी, जिसे महिला स्वतंत्रता के संदर्भ में समझा जा सकता है। युद्ध के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में श्रम की आवश्यकता ने महिलाओं के इन क्षेत्रों में प्रवेश के लिये अनुकूल अवसर प्रदान किया। महायुद्ध में सैनिकों की बढ़ती मांग के कारण युद्धरत राष्ट्रों के लाखों पुरुष अपने कार्यों को छोड़कर युद्ध में चले गए और उनकी जगह कार्यालयों, कारखानों आदि में महिलाएँ कार्य करने लगीं। इतना ही नहीं बल्कि युद्ध क्षेत्र में ही महिलाओं ने घायलों की सेवा का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इस तरह घरेलू जीवन की संकुचित दीवारों से बाहर निकलकर आर्थिक उत्पादन के क्षेत्र में उनकी भागीदारी बढ़ी। फलस्वरूप उनमें आत्मविश्वास बढ़ा और समाज में पुरुषों के समान उन्हें भी महत्त्व दिया जाने लगा।

  इन परिस्थितियों में महिला स्वतंत्रता आंदोलन को बल मिला और विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के संगठन अस्तित्व में आए। यही वह काल था जब महिला मताधिकारों को स्वीकार किया गया। ब्रिटेन में 1918 में तथा यू.एस.ए. में 1920 में महिलाओं को मत देने का अधिकार दिया गया।

अध्याय
5

द्वितीय विश्वयुद्ध (Second World War)

5.1 द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व की पृष्ठभूमि एवं घटनाक्रम *(Background and Events of the Second World War)*

- 1914 में शुरू हुआ प्रथम विश्वयुद्ध जब दीर्घकालीन रूप लेने लगा तब यह कहा जाने लगा था कि यह युद्ध, युद्ध को समाप्त करने वाला है। युद्ध समाप्त हुआ, पेरिस शांति सम्मेलन हुआ, राष्ट्रसंघ बना और शांति व सुरक्षा की बात की जाने लगी। किंतु इस युद्ध के महज़ 20 वर्षों के पश्चात् विश्व को दूसरे महायुद्ध का सामना करना पड़ा जो अपने स्वरूप, विस्तार एवं प्रभाव में पहले युद्ध की अपेक्षा भिन्नता लिये हुए था। पेरिस शांति सम्मेलन (1919) के बाद वास्तव में कभी शांति स्थापित ही नहीं हुई थी और 20 वर्षों का अंतराल एक लंबा अंतर्राष्ट्रीय संकट ही था, भले ही महाशक्तियों के बीच इस दौरान आपस में सीधी मुठभेड़ न हुई हो। लेकिन अनेक हिंसक सैनिक अभियान इन 20 वर्षों में जारी रहे, चाहे वह स्पेन का गृहयुद्ध हो, इटली का अबीसीनिया पर आक्रमण हो, जापान द्वारा कोरिया, मंचूरिया में आक्रामक प्रसार हो या फिर जर्मनी द्वारा पोलैंड की सीमाओं का अतिक्रमण।
- जहाँ तक द्वितीय विश्वयुद्ध के बुनियादी कारणों को जानने की बात है तो उसमें वर्साय की संधि, उसकी कठोरता, विश्वव्यापी आर्थिक मंदी, तानाशाहों की राजनीति, शस्त्रीकरण तथा इंग्लैंड की तुष्टीकरण की नीति आदि कारकों ने अंतर्राष्ट्रीय वातावरण को तनावों से भर दिया था। इन तनावों की परिणति 1 सितंबर, 1939 को द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत से हुई और जिसका अंत 14 अगस्त, 1945 को हुआ।
- जहाँ तक द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभावों की बात है तो यह प्रथम विश्वयुद्ध की तुलना में अधिक विनाशकारी रहा। परमाणु बम के प्रयोग ने मानव सभ्यता के विनाश को अवश्यंभावी बना दिया। युद्ध में संघर्षरत शक्तियों और तत्पश्चात् अपनी प्रभुता को स्थापित करने के क्रम में शीतयुद्ध का आरंभ हुआ।

फासीवादी शक्तियों द्वारा उत्पन्न युद्ध के खतरों को ब्रिटेन और फ्राँस के सक्रिय सहयोग एवं हस्तक्षेप से स्थगित किया जा सकता था। 1920-1930 का दशक आर्थिक और राजनीतिक संकट, फासीवादी शक्तियों के उदय और आक्रामक युद्धों में परिवर्तित नहीं होता; यदि उदारवादी राजनीतिक शक्तियाँ इस संकट से निपटने की राह में पहले ही अपनी शक्ति केंद्रित कर देतीं।

चीन-जापान युद्ध

1928-37 के काल में पूर्वी एशिया में जापान खाद्यान्न, कच्चा माल, कच्चा तेल और खनिज संसाधनों का दोहन और बसावट हेतु भू-क्षेत्र प्राप्त करने हेतु 1937 में चीन-जापान युद्ध हुआ। 1930 में आर्थिक महामंदी के पश्चात् अपनी स्थिति मज़बूत बनाने हेतु चीन के उत्तरी-पूर्वी भाग पर स्थित मंचूरिया पर जापान की नज़रें थीं। 1930 के दशक में उत्पन्न उग्र राष्ट्रवाद और सैन्यवाद की अभिव्यक्ति साम्राज्यवाद के रूप में होना निश्चित थी। इसकी एक झलक जापान द्वारा मंचूरिया पर आधिपत्य करने में दिखाई देती है। 1931 में जापान द्वारा मंचूरिया पर अधिकार ने पूरे विश्व को यह सूचित कर दिया कि जो सत्ता की राजनीति प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् किसी प्रकार कम-से-कम कुछ समय के लिये बंद हो गई थी, अब पुनः प्रारंभ हो गई है।

इटली का अबीसीनिया पर आक्रमण

प्रथम विश्व युद्ध में इटली ने मित्र राष्ट्रों की मदद इसलिये की थी कि उसे भी कुछ लाभ प्राप्त हो जाएगा परंतु युद्ध के बाद हुई संधि में इटली को कोई लाभ नहीं हुआ और न ही इटली की औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित करने की महत्त्वाकांक्षा पूरी हुई। अक्तूबर 1935 में इटली ने अबीसीनिया (आधुनिक इथियोपिया) पर आक्रमण कर दिया। संयुक्त राष्ट्र ने इटली

अध्याय
6

यूरोपीय साम्राज्यवाद : अफ्रीका व एशिया
(European Imperialism : Africa and Asia)

लेनिन ने 1916 में अपनी पुस्तक 'साम्राज्यवाद पूंजीवाद का अंतिम चरण' में लिखा कि साम्राज्यवाद एक निश्चित आर्थिक अवस्था है जो पूंजीवाद के चरम विकास के समय उत्पन्न होती है। चार्ल्स ए बेयर्ड के अनुसार- ''सभ्य राष्ट्रों की कमज़ोर एवं पिछड़े लोगों पर शासन करने की इच्छा व नीति ही साम्राज्यवाद कहलाती है।'' 15-16वीं शताब्दी में भौगोलिक अन्वेषण के फलस्वरूप औपनिवेशिक साम्राज्यों का युग आया। इस साम्राज्यवादी युग को दो भागों में बाँटकर अध्ययन किया जा सकता है– पुराना और नवीन साम्राज्यवाद। पुराने साम्राज्यवाद का आरंभ लगभग 15वीं शताब्दी से माना जा सकता है जब स्पेन और पुर्तगाल ने इस क्षेत्र में कदम बढ़ाया। साम्राज्यवाद का यह दौर 18वीं शताब्दी के अंत तक चला। स्पेन और पुर्तगाल ने तमाम देशों की खोज कर वहाँ अपनी व्यापारिक चौकियाँ स्थापित कीं। धीरे-धीरे फ्राँस और इंग्लैंड ने भी इस दिशा में कदम बढ़ाया। इंग्लैंड का औपनिवेशिक साम्राज्य संपूर्ण विश्व में स्थापित हो गया।

6.1 साम्राज्यवाद *(Imperialism)*

19वीं शताब्दी में इस साम्राज्यवाद ने नवीन रूप धारण किया। 1870 ई. के बाद यूरोप के देशों में साम्राज्यवादी भावना नए रूप में सामने आई। यह नवसाम्राज्यवाद पहले के उपनिवेशवाद से आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से भिन्न था। पुराना साम्राज्यवाद वाणिज्यवादी था, चाहे यह भारत हो या चीन अथवा दक्षिण-पूर्व एशिया। यूरोपीय व्यापारी स्थानीय सौदागरों से उनका माल खरीदते थे। मार्गों की सुरक्षा के लिये कुछेक स्थानों पर कार्यालयों तथा व्यापारिक केंद्रों की रक्षा के अतिरिक्त यूरोपीय राष्ट्रों को राज्य या भूमि की भूख नहीं थी। नवसाम्राज्यवाद के दौर में अब सुनियोजित ढंग से यूरोपीय देश पिछड़े इलाकों में प्रवेश कर उन पर प्रभुत्व जमाने लगे। इन क्षेत्रों में उन्होंने पूंजी लगाई, बड़े पैमाने पर खेती आरंभ की, खनिज तथा अन्य उद्योग स्थापित किये, संचार और आवागमन के साधनों का विकास किया तथा सांस्कृतिक जीवन में भी हस्तक्षेप किया। अपने प्रशासित इलाकों की परंपरागत अर्थव्यवस्था और उत्पादन अर्थव्यवस्था को विनष्ट करके बहुसंख्यक स्थानीय लोगों को विदेशी मालिकों पर आश्रित बना दिया।

उपनिवेशवाद *(Colonialism)*

उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद में स्वरूपगत भिन्नता दिखाई पड़ती है। उपनिवेशवाद साम्राज्यवाद से अधिक जटिल है क्योंकि यह उपनिवेशवाद के अधीन रह रहे मूल निवासियों के जीवन पर गहरा तथा व्यापक प्रभाव डालता है। इसमें उपनिवेश के लोगों पर उपनिवेशी शक्ति के लोगों का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक नियंत्रण स्थापित होता है तो दूसरी तरफ साम्राज्यवाद में साम्राज्यिक राज्यों पर राजनीतिक शासन की व्यवस्था शामिल होती है। इस तरह साम्राज्यवाद में मूल रूप से राजनीतिक नियंत्रण की व्यवस्था है, वहीं उपनिवेशवाद औपनिवेशिक राज्य के लोगों द्वारा विजित लोगों के जीवन तथा संस्कृति पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की व्यवस्था है। साम्राज्यवाद के प्रसार हेतु जहाँ सैनिक शक्ति का प्रयोग और युद्ध प्राय: निश्चित होता है, वहीं उपनिवेशवाद में शक्ति का प्रयोग अनिवार्य नहीं होता।

नवीन साम्राज्यवाद के प्रेरक तत्त्व *(Stimulating factors of New Imperialism)*

- **अतिरिक्त पूंजी का होना :** औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप यूरोप के देशों में धन का अत्यधिक संचय हुआ। इस अतिरिक्त संचित पूंजी को यदि यूरोप के देशों में पुन: लगाया जाता तो लाभ बहुत कम मिलता जबकि पिछड़े हुए देशों में श्रम सस्ता होने से और प्रतियोगिता शून्य होने से अत्यधिक लाभ की संभावना थी। इसी कारण पूंजी को उपनिवेशों में लगाने की होड़ प्रारंभ हुई।
- **कच्चे माल की आवश्यकता :** यूरोपीय देशों को अपने औद्योगिक उत्पादन के लिये कच्चे माल और अनाज की ज़रूरत थी, जैसे- कपास, रबर, टिन, जूट, लोहा आदि। अत: ये औद्योगिक देश औपनिवेशिक प्रसार में लग गए, जहाँ से उन्हें सुगमतापूर्वक सस्ते दामों में कच्चा माल मिल सके।

अध्याय
7

औपनिवेशिक शासन से मुक्ति (Liberation From Colonial Rule)

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात् साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद की जकड़न में फँसे राष्ट्रों के स्वतंत्र होने की प्रक्रिया तीव्र हुई, जिससे विश्व राजनीति में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के नव-स्वतंत्र देश अस्तित्व में आए। इन नव स्वतंत्र देशों में से अधिकांश किसी गुट विशेष में सम्मिलित नहीं हुए बल्कि इन्होंने गुट-निरपेक्षता की नीति का अवलंबन किया और तृतीय विश्व का भाग बने।

विउपनिवेशीकरण के कारण

1. **साम्राज्यवाद का कमज़ोर होना:** द्वितीय विश्वयुद्ध ने फासीवाद की समाप्ति के साथ-साथ यूरोप के साम्राज्यवादी देशों को भी कमज़ोर कर दिया। युद्ध के दौरान इन देशों की सैन्य-शक्ति और अर्थव्यवस्थाएँ छिन्न-भिन्न हो गई थी, फलत: इनमें से कोई भी देश अब बड़ी शक्ति के रूप में नहीं रहा।
   दूसरी ओर, पूर्वी यूरोप में समाजवादी सरकार की स्थापना से भी यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियाँ चरमरा गईं। वर्तमान वातावरण में अब साम्राज्यवाद को श्रेष्ठ सभ्यता की निशानी नहीं माना गया बल्कि उसे शोषण का पर्याय कहा गया। 1956 में जब ब्रिटेन ने फ्राँस एवं इज़राइल के साथ मिलकर मिस्र पर आक्रमण किया तो ब्रिटेन में ही व्यापक स्तर पर सरकार विरोधी प्रदर्शन किये गए।
2. **उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलनों की एकता:** उपनिवेशों में साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद के प्रति असंतोष अब अधिक तीव्रता से व्यक्त होने लगा। एक देश के स्वतंत्रता आंदोलन का दूसरे देश पर प्रेरणादायक प्रभाव पड़ा तथा इनके नेतृत्वकर्ता आपसी संपर्क एवं समन्वय को भी बढ़ा रहे थे। जैसे हिंद चीन में स्वतंत्रता आंदोलन के दमन हेतु भारतीय सैनिकों को भेजे जाने पर भारत में ब्रिटिश विरोधी तथा हिंदचीन समर्थक प्रदर्शन तथा हड़तालें हुईं।
   नव-स्वतंत्र देशों की एकजुटता ने भी उपनिवेशवाद की समाप्ति में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया। इसके लिये इन देशों द्वारा राष्ट्रमंडल, संयुक्त राष्ट्रसंघ और गुटनिरपेक्ष आंदोलन जैसे मंचों का प्रयोग सफलतापूर्वक किया गया।
3. **संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका:** संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के साथ ही विश्व में आत्मनिर्णय, राष्ट्रीय संप्रभुता तथा समानता एवं राष्ट्रों के बीच सहयोग जैसे विचारों का बोलबाला कायम हो गया। संयुक्त राष्ट्र के घोषणा-पत्र तथा मानवाधिकारों की घोषणा ने उपनिवेशों में स्वतंत्रता की आकांक्षा को बलवती किया। संयुक्त राष्ट्रसंघ, जो कि स्थापना के साथ ही उपनिवेशवाद के विरोध में था; जैसे-जैसे उसमें पूर्व उपनिवेशवाद से पीड़ित देशों की संख्या बढ़ रही थी, वह साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के अंत में अधिकाधिक सक्रिय भूमिका का निर्वहन करने लगा।
4. **द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव:** युद्ध के दौरान जापान द्वारा यूरोपीय राष्ट्रों को पराजित करने से यूरोपियन सेनाओं की अपराजेयता का मिथक टूटा। जिसका सर्वाधिक प्रभाव दक्षिण-पूर्व एशिया में दिखा जहाँ जापानी सेना के आत्मसमर्पण के पश्चात् यहाँ के राष्ट्रवादी, स्वतंत्रता आकांक्षी समूहों ने छापामार युद्ध प्रणाली का प्रयोग कर साम्राज्यवादी शक्तियों को अत्यधिक क्षति पहुँचाई।
   द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1941 में घोषित अटलांटिक चार्टर में राष्ट्रीय स्वतंत्रता, अस्तित्व तथा आत्मनिर्णय जैसे शब्दों को अत्यधिक महत्त्व व लोकप्रियता मिली। जब अमेरिकी राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने यह स्पष्ट कर दिया कि- "अटलांटिक चार्टर मात्र जर्मनी के शिकार लोगों पर ही नहीं बल्कि विश्व के सभी लोगों पर लागू होता है" तो इसने उपनिवेशों को अपनी स्वतंत्रता के पक्ष में विश्व की प्रमुख शक्तियों के खड़े होने का एहसास दिलाया और वे अधिकाधिक स्वतंत्रता के लिये छटपटाने लगे। हालाँकि अमेरिका जैसी शक्ति का यह समर्थन उसके स्वहितों से ही प्रेरित था और ये हित थे- इन उपनिवेशों में साम्यवादी प्रसार का भय, यदि वह (पूंजीवादी अमेरिका) समर्थन नहीं करता है तो और साथ ही यदि ये उपनिवेश स्वतंत्र हुए तो वहाँ अपना राजनीतिक आर्थिक प्रभाव बढ़ाने का लालच भी अमेरिका को था।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456